ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

रामस्नेही संप्रदाय में संगीत की भूमिका

[1]Kamal Trivedi, [2]Dr. Seema Rathore

[1]Research Scholar, Department of Music, Govt. Meera Girls' PG College, M.L.S.U. Udaipur, Rajasthan, India

[2]Supervisor, Department of Music, Govt. Meera Girls' PG College, M.L.S.U. Udaipur, Rajasthan, India

सार

रामस्नेही संप्रदाय के प्रवर्त्तक स्वामी रामचरण जी महाराज थे। उनका प्रादुर्भाव वि. स. १७७६ में हुआ। साधारण जन को लोकभाषा में धर्म के मर्म की बात समझाकर, एक सूत्र में पिरोने में इस संप्रदाय से जुड़े लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इन संतों ने हिंदू-मुसलमान, जैन- वैष्णव, द्विज- शूद्र, सगुण-निर्गुण, भक्ति व योग के द्वन्द्व को समाप्त कर एक ऐसे समन्वित सरल मानवीय धर्म की प्रतिष्ठापना की जो सबके लिए सुकर एवं ग्राह्य था। आगे चलकर मानवीय मूल्यों से सम्पन्न इसी धर्म को "रामस्नेही संप्रदाय' की संज्ञा से अभिहित किया गया।

परिचय

प्रात: स्मरणीय स्वामी श्री रामचरण जी महाराज का जन्म विक्रम संवत 1776 सन 1720 (24-फ़रवरी-1720) माघ शुक्ल चतुर्दशी शनिवार को बखतराम जी ग्राम बनवाड़ा में पूज्य शीला माता देऊजी की कोख से हुआ । दीक्षा के समय आपकी आयु 31 वर्ष 7 माह थी | ये विजयवर्गीय वैश्य थे। इनका बचपन का नाम रामकृष्ण था। जन्म के पश्चात हिन्दु परम्परा के अनुसार नामकरण के अवसर पर जन्म पत्रिका बनाई गई तो ज्योतिषियों ने कहाकि यह बालक सम्राट या योगेश्वर होगा। बचपन में ये हंसमुख व आकर्षक थे। ये स्वस्थ शरीर व कुशाग्र बुद्धि के धनी थे । इनका विवाह चांदसेन ग्राम के सम्पन्न परिवार की कन्या से हुआ था। यह जयपुर राज्य में महत्वपूर्ण पद पर सेवारत थे। अपने कार्यो के प्रति हमेशा निष्ठावान रहे । उनकी न्यायपरकता और निष्पक्षता से सभी लोग प्रभावित थे। 31 वर्ष की आयु में आपकी भेंट एक ज्योतिषी से हुई उसने आपको देखकर आश्चर्य प्रकट किया कि आपको सम्राट या योगेश्वर होना चाहिए। इस घटना से कुछ दिन पूर्व उनके पिता की मृत्यु हुई थी इससे वे व्यथित थे। उन पर ज्योतिषी की बात का विशेष प्रभाव हुआ। उसी समय से वे सांसारिक बातों से उदासीन होने लगे तथा सन्यास ग्रहण कर लिया। जिस दिन ज्योतिषी ने यह बात बताई उसी रात्रि को उन्होंने स्वप्न मे देखा किवे ज्यों ही नदी में स्नान को उतरे उनका पैर फिसल गया और तेज धार में बहने लगे। उसी समय उक श्वेत वस्त्रधारी वृद्ध साधू ने उन्हें हाथ पकड़कर उस धार से बाहर निकाल लिया। इसी समय स्वप्न भंग हो गया। देखा तो वहां कुछ नहीं दिखा। इस घटना का उन पर गहरा प्रभाव हुआ। वे अपनी राजकीय सेवाऐ घर बार सब कुछ छोडऋकर स्वप्न का रहस्य जानने निकल पड़े। चलते – चलते ये शाहपुरा आये वहां पता चला कि उनके स्वप्न के अनुरूप् संत ग्राम दोतड़ा में निवास करते है। इस जानकारी से उन्हें अति आनन्द हुआ और वे संत दर्शन के लिए बेताब हो उठे और दोतड़ा की और चल दिये। उस समय दोतड़ा में स्वामी संतराम जी के शिष्य स्वामी कृपाराम जी निवास करते थे। स्वामी रामकृष्ण जी ने अपने आप को इनके चरणों में समर्पित कर दिया। इन्होंने अपने मन की सारी व्यथा उनके सामने रख दी। श्री कृपाराम जी ने योग्य जानकर अपने पास रहने की अनुमति प्रदान कर दी और बाद में अपना शिष्य बनाया। श्री कृपाराम जी ने उनकी हर तरह की परीक्षा के पश्चात विक्रम संवत 1808 भाद्रपद शुक्ल 7 गुरूवार को राममंत्र की दीक्षा देकर दीक्षित किया और उनका नाम रामकृष्ण से रामचरण रख दिया। उस समय इनकी आयु 31 वर्ष थी। दीक्षा प्रापित के बाद स्वामी रामचरण जी गुरू की आज्ञा से 7 वर्ष तक गुदड़वेश साधना करते रहे इसके पश्चात गलता मेले में गुरू आज्ञा से गुदड़वेश त्याग कर साधना में रत हुए। अस समय इनके मन में वृंदावन दर्शन की इच्छा थी। गुरू की आज्ञा प्राप्त कर वृन्दावन की और चले। रास्ते में अचानक उनको संत दर्शन हुद और उन्होने मंत्र जाप की आज्ञा दी और अन्त्रतध्यान हो गये । इस घटना से रामचरण जी अचंभित हुए और वृन्दावन का विचार त्याग वापस जयपुर आकर साधना करने लगे वहां उनको गुरू कृपाराम जी के दर्शन हुए। उन्होने रास्ते की घटना अपने गुरू से निवेदन की। गुरूदेव कृपाराम जी ने उन्हें राम नाम की साधना का आर्शीवाद दिया। इसके पश्चात कुछ समय तक जयपुर में साधना की। दो वर्ष जयपुर में साधना के पश्चात भीलवाड़ा गये वहां मायानन्द जी की बावड़ी को अपना साधना स्थल बनाया। उस काल में राजस्थान में मूर्ति पूजा व बाá आडम्बर का जोर था इनकी निवृÿाि मार्ग की साधना से कई लोग रूष्ट थे। एक रात्रि को श्री रामचरण जी को विष दिया गया किन्तु उन पर कोई असर नहीं हुआ स्वामी जी ने भी व्रत ले लिया। विरोधियों ने एक भील को प्रलोभन देकर स्वामी को मरवाने का यत्न किया। भील तलवार लेकर जब साधना स्थल पर गया तो आसन पर स्वामी जी के दर्शन नहीं हुए वह भयभीत हो गया फिर उसे वहां अगिन पुंज के दर्शन हुए और उसमें स्वामी जी के दर्शन हुए। वह भयभीत होकर स्वामी जी के चरणों में गिर गया। स्वामी जी को साधना करते हुए भीलवाड़ा में कई वर्ष हो गये। गृहस्थ शिष्य विरक्त होने लगे। स्वामी जी के इस प्रयास को कई लोग सहन नहीं कर पाये औद उनके प्राण लेने का यत्न करने लगे। कुछ लोगों ने उदयपुर महाराणा से यह शिकायत की कि स्वामी रामचरण जी धर्म को नष्ट कर रहे हैं। उदयपुर महाराणा ने जानकारी हेतु एक अधिकारी स्वामी जी के पास भेजा इससे

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

उनका मन उद्विग्न हो गया और वे भीलवाड़ा छोड़कर कुहाड़ा चले गये।लोगो ने रोकने की बहुत कोशिश की किन्तु उन्होने समझाकर लोगों को वापस भेज दिया। कुहाड़ा आकर वे साधनारत हो गये। इधर लोगों ने उदयपुर महाराणा को वास्तविकता से अवगत करवाया। महाराणा ने पश्चाताप किया और संतो ंके सम्मान में 300 पगड़ी व शाल भेंट की। लोगों के आग्रह पर पुन: भीलवाड़ा पधारे वहां उन्होंने साधना कर शब्द योग का ज्ञान प्राप्त किया।इसी बीच शाहपुरा के राजा ने उन्हें शाहपुरा पधारने का आमंत्रध दिया। भीलवाड़ा में संवत 1817 में आपने रामस्नेही सम्प्रदाय की स्थापना की। वहां रहते हुए उन्होंने अपनी वाणी की रचना की, अपने शिष्य रामचरण की इस साधना व सफलता से उनके गुरू कृपाराम जी अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने अणभै वाणी मंगवाकर स्वयं देखा उसे सुना और कहा कि यह संतोषी गृहस्थों का अमूल्य धन है। संवत 1826 में स्वामी जी शाहपुरा पधारे वहां के राजा व प्रजा ने आपका भव्य स्वागत किया। स्वामी जी नेे अपनी साधना स्थली वहां श्मशान को बनाया। वहीं रहकर साधना करने लगे राज्य की और से वहां एक छतरी का निर्माण कराया गया स्वामी जी हर एक मानव को एक समान मानते थे। वे राजा रंक में भेद नहीं करते थे। शाहपुरा में आपके शिष्यों की संख्या 225 हो गई थी। इसके पश्चात स्वामी जी ने अपनी सम्पूर्ण जीवन साधना शाहपुरा में ही रहकर की। दीक्षा के बाद में, 12 वर्ष तक भकित साधना की चार चौकियां पार कर भीलवाड़ा में स्वामी जी की आध्यातिमक अनुभूतियां मुखरित हुई तथा अनुभव वाणी खुली, आपके सैकड़ो भक्त व शिष्य बनने लगे। सन 1761 में राम स्नेही भक्तों ने विचार कर भीलवाड़ा में सरकार से 12 बीघा पक्की भूमि खरीदकर राम – द्वारा भवन निर्माण करवाया। स्वामी जी तब भीलवाड़ा में विराज रहे थे तब सभी भक्तों ने धर्म प्रचार के उंेश्य से एक प्रसिद्ध वार्षिक उत्सव फूल डोल, होली पर मनाने का विचार किया जो आज तक भी मनाया जाता है। स्वामी जी ने 78 वर्ष 2 माह 7 दिन की आयु में इहलीला का संवरण राम नाम अमृत का पान करते हुए बैसाख कृष्ण 5, गुरूवार, 5 अप्रैल 1788 में राम की आवाज करके ब्रáलीन हुए। लेकिन शरीर त्याग के पश्चात भी आपके होंठ हिलते रहे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि स्वामी जी महाराज राम नाम का स्मरण कर रहे हैं। राजस्थान वीरों की भूमि के साथ – साथ संतों की भूति भी रही है। इसी परम्परा में तत्कालिक परिसिथतियों के अनुकूल स्वामी रामचरण जी ने अपने आराध्य राम के नाम पर रामस्नही सम्प्रदाय की स्थापना की जो प्राणी मात्र से रमते राम सा स्नेह करते हैं। इसी भावना से ही उन्होंने सम्प्रदाय का नाम रामस्नेही रखा। उन्होंने अपने साधना अनुभवों का अमूल्य संकलन अणभै वाणी ग्रंथ में किया। जिसमें 36397 पद है। इस ग्रन्थ में दोहा, चन्द्रायण काव्य कवि, कण्डल्या राग रखता आदि है। इसमें 24 ग्रन्थों का संकलन है इसकी हस्तलिखित प्रति आज भी शाहपुरा धाम में सुरक्षित है। स्वामी रामचरण जी महाराज अपने काल के अद्वितीय संत हुए उन्होंने उस अराजक काल में एक नया संदेश देकर लोगो में उत्साह जागृत किया। जाति – पांति के भेद को मिटाकर सभी को राम मंत्र की दीक्षा दी।

स्वामी रामचरण जी महाराज ने 'जिज्ञासबोध' के चतुर्थ प्रकरण में 'राम' शब्द के दोनो वर्ण रा और म का रहस्य स्पष्ट करते हुए कहा कि जैसे सूर्य और चंद्र ब्रह्मांड के दो नेत्र हैं वैसे ही वेद के दो नेत्र रकार और मकार है इन दोनों नेत्रों से ही ज्ञान का प्रकाश मिलता है। इसके बिना क्रिया कर्म साधन श्रम सब अंधे हैं। इसलिए 'निजबंदगी' में लीन होकर 'ब्रह्मशब्द' इक 'राम' का उच्चारण करना चाहिए

विचार-विमर्श

सबसे प्रमुख गुरु राम चरण महाराज के बाद राम जन रामस्नेही संप्रदाय के पहले आचार्य थे । उन्होंने अपने गुरु द्वारा दिए गए सिद्धांतों पर संप्रदाय को औपचारिक रूप दिया।

राम जन ने राजस्थान के शाहपुरा में स्थित मुख्य रामद्वारा राम निवास धाम का निर्माण भी करवाया , जो राम चरण महाराज की समाधि है । स्वामी राम जन महाराज, राम चरण महाराज के काव्य-आध्यात्मिक भाषणों को एक विशाल पुस्तक, वाणी जी के रूप में संपादित और संकलित करने के लिए भी जिम्मेदार थे । [1] रामचरण जी का जन्म माघ शुक्ला 14 शनिवार संवत् 1776 (1719 ई॰) को अपने ननिहाल सोडा नामक ग्राम में हुआ। यह स्थान राजस्थान के टोंक जिले के मालपुरा नामक नगर के समीप है। आपके पिताजी का नाम बख्तराम जी तथा माताजी का नाम देउजी था। ये मालपुरा के समीप बनवाडा नामक ग्राम के रहने वाले थे। इनकी जाति विजयवर्गीय वैष्य गौत्र कापडी थी। स्वामी जी का बचपन का नाम रामकिशन था।

विनतीरामजी द्वारा लिखित जीवन चरित्र पुस्तक में इनके विवाह का उल्लेख किया है। आपका विवाह चांदसेन नामक ग्राम में, एक सम्पन्न परिवार में गिरधारीलाल खूंटेटा की कन्या गुलाब कंवर बाई के साथ हुआ। इस अवधि के आपके एक पुत्री का जन्म हुआ जिनका नाम जडाव कंवर था। केवल श्री जगन्नाथ जी कृत गुरू लीला विलास में इसका उल्लेख मिलता है।

इन्होने ने जयपुर राज्य के अन्तर्गत किसी उच्च पद पर निष्ठा पूर्वक राजकीय सेवा की। कुछ अन्य लेखकों एवं श्री लालदास जी की परची के अनुसार उन्होंने जयपुर राज्य के दीवान पद पर काम किया। उनके पिता के मोसर के अवसर पर राज्य की ओर से टीका पगडी का दस्तूर आना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि वे किसी सम्मानित पद पर आसीन थे।

इनके गुरु कृपाराम जी महाराज थे जिन्होंने इन्हें राम भक्ति की शिक्षा दी। सं. 1817 में ये भीलवाडा गये और वहीं अपनी अणभैवाणी की रचना की। इनके निवास हेतु वि. सं. 1822 में देवकरण जी तोषनीवाल ने रामद्वारा का निर्माण कराया गया।

स्वामीजी रामचरण जी महाराज वैषाख कृष्ण पंचमी गुरूवार सं. 1855 को शाहपुरा में ही ब्रहम्लीन हुए| रामदयाल शर्मा एक भारतीय नौटंकी कलाकार हैं। वह एक गायक, संगीतकार और शिक्षक भी हैं। 2022 में, उन्हें कला में उनके योगदान के

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

लिए भारत सरकार द्वारा पद्म श्री और 2015 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया । [1] [2] 2003 में, शर्मा को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) द्वारा मुद्रा पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया गया था। 2004 और 2005 में, भारत सरकार ने उन्हें गणतंत्र दिवस परेड के लिए स्कूली बच्चों पर रक्षा सेना को सलाह देने के लिए विशेषज्ञ समिति में नामित किया। 2012 में वह नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में नौटंकी के शिक्षक थे । उन्होंने कई मौलिक नौटंकियाँ भी लिखीं जैसे रामचरितमानस के सुंदर कांड पर आधारित "सुंदर कथा", और दहेज की समस्या पर "बेटी का ब्याह"। उन्होंने एक पौराणिक कहानी "हनुमान की रामायण" को नौटंकी में रूपांतरित किया। उन्होंने हमारी पारंपरिक संस्कृति को आज की पीढ़ी के युवाओं और छात्रों तक पहुंचाने के लिए अथक प्रयास किए हैं। उन्होंने थिएटर रॉयल लंदन, तारा आर्ट्स यूके और कई अन्य स्थानों पर भी प्रदर्शन किया है। [2] [4]

अठारहवीं, सदी का राजस्थान एक प्रकार से आपसी कलह, षड्यंत्र, और विद्रोह की घटनाओं का पिटारा था। जिस शौर्य और आत्माभिमानी कूटनीति मध्ययुगीन शासकों ने अपनाई थी वह शौर्य, आत्माभिमान व कूटनीति इस युग के शासकों के लिए एक कथानक मात्र रह गये थे। यदा-कदा इन नरेशों के गठबंधन होते थे तो वे केवल एक राजवंश के द्वारा दूसरे राजवंश को नीचा दिखाने के लिए ही होते थे। इस समय राजस्थान के राज्य समस्या ग्रस्त थे। एक तो मुगल साम्राज्य के पतन ने राजस्थान के नरेशों को असहाय और अकर्मण्य बना दिया, दूसरी और मराठा आक्रमणों ने इन राज्यों को निर्बल और आभाहीन कर दिया।

मुगल सर्वोच्चता के समय दिल्ली की केन्द्रीय सत्ता राजस्थान के सभी राज्यों पर नियंत्रण रखती थी। परन्तु औरंगजेब की मृत्यु के बाद अब मुगल सर्वोच्चता नाम मात्र की रह गई। मुगल सम्राट का प्रभाव अब नहीं रहा। ऐसे में राजपूत राज्यों को अनुशासित करने वाली शक्ति भी समाप्त हो गई। अब ऐसी कोई सर्वोच्च शक्ति नहीं थी जो राजपूत राज्यों को अनुशासित करती, आदेशों का पालन करवा सकती, और इन राज्यों के पारस्परिक युद्धों को रोकती और इन राज्यों के आंतरिक झगड़ों को निपटा सकती। अठारहवीं शताब्दी में राजस्थान में राज्यों की आंतरिक समस्यायें भी उभरकर सामने आ गई। सरदारों की आपसी फूट ने राज्य में विरोधी दलों का निर्माण कर दिया। इन दलों ने उत्तराधिकार संबंधी मामलों में बढ़-चढ़कर भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उत्तराधिकार संघर्ष हुए। इससे राज्यों की आंतरिक शक्ति कमजोर हो गई। 18वीं शताब्दी में मुगलों की केन्द्रीय सत्ता के पतन के साथ ही राजस्थान के राजपूत राज्यों में अराजकता तथा अशांति के साथ गृहयुद्धों का सिलसिला प्रारंभ हुआ। बूँदी के आंतरिक झगड़े में जब सवाई जयसिंह ने बूँदी के राव बुद्धसिंह को पद्च्युत कर दिया तब बुद्धसिंह की रानी ने जयपुर के विरूद्ध मराठों को अपनी सहायता के लिए आमंत्रित किया।

इसी के साथ राजस्थान की राजनीति में मराठों का पदार्पण हुआ। इसके बाद तो मराठों ने जयपुर के उत्तराधिकार संघर्ष में बारी-बारी से दावेदारों का पक्ष लिया। इसी प्रकार मारवाड़ और मेवाड़ के उत्तराधिकार संघर्ष में भी मराठों ने हस्तक्षेप किया और इन राज्यों को यथाशक्ति लूटा। इसके फलस्वरूप यह राज्य शक्तिहीन हो गए। कोटा और बूँदी में तो मराठों की लूटमार से सारी शासन व्यवस्था और जनजीवन ही अस्त-व्यस्त हो गया था। ऐसे समय धर्मों के बीच एवं समाज के विभिन्न वर्गों के बीच स्थित द्वन्द्व एवं तनाव को मिटाने के लिए सन्तों का आर्विभाव हुआ। इन सन्तों ने समन्वय, समानता एवं हृदय की शुद्धि व ईश्वर-भक्ति पर जोर देते हुए सगुण व निर्गुण में हिन्दू व मुस्लिम समाज के उच्च व निम्न वर्ग में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। धर्म को संकुचित दायरे से बाहर निकालकर इसके सार्वभौमिक संदेश को जन-जन तक पहुँचाया, धर्म के असली मर्म को समझाया। उँच-नींच के भेदभावों को मिटाने से नवजागरण के प्रयास सुधारवादी बन गये और जन समुदाय इससे लाभान्वित हुआ। समन्वय की भावना, आचरण की शुद्धता, ईश्वर-साधना और आत्म-कल्याण के आदर्श सिद्धान्तों के कारण तथा लोक-भाषा के प्रयोग के कारण ये पंथ और सम्प्रदाय बड़े लोकप्रिय हुए। राजस्थान में भी अनेक संतों एवं सम्प्रदायों का उद्भव हुआ।

इन धन्ना में धन्ना, पीपा, रैदास, जांभोजी, जसनाथजी, दादूदयाल, लालदास, चरणदास, मीराबाई, संत दरिया साहब, रामचरणजी, हरिरामदासजी एवं रामदासजी आदि प्रमुख हुए। राजस्थान में इस धार्मिक आन्दोलन का श्रीगणेश धन्ना और पीपा ने किया था, जो रामानंद और कबीर से प्रेरणा ले रहे थे।

संत धन राजस्थान के धार्मिक आन्दोलन के प्रणेता माने जाते हैं। इनका जन्म 1415 ई. में टोंक के धुवन ग्राम के जाट परिवार में हुआ था। बचपन से ही आप ईश्वर भक्ति में लीन रहते थे अतः काशी जाकर सन्त रामानंद के शिष्य हो गये। रामानंद जी की प्रेरणा से उन्होंने निर्गुण भक्ति ग्रहण कर ली। पीपा राजस्थान में गागरोण के खींची राजपूत थे। बाल्यावस्था से ही इनके हृदय में भक्ति-भावना अंकुरित हो चुकी थी।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

जांभोजी उस युग की साम्प्रदायिक संकीर्णताओं, आडम्बरों एवं कुरीतियों के प्रति जागरूक थे। उनका कहना था कि ईश्वर, सर्वव्यापक है और यदि आत्मा को, जो अमर है, वश में कर लिया जाए तो मुक्ति का मार्ग खुल जाता है। संत दादूयाल का जन्म गुजरात प्रान्त के अहमदाबाद नगर में वि.सं. 1601 फाल्गुन शुक्ला अष्टमी को हुआ। दादू का ब्रह्म निराकार, निरंजन, निर्गुण है। वह स्वयंभू, परम-प्रभावस्वरूप, परमज्योति रूप माया से परे, क्रियारहित सुस्थित तथा सदा-एकरस है। दादू की दृष्टि में मनुष्य का अंतःकरण ही सच्चा उपासना गृह है। मनुष्य मात्र की समानता और एकता में ही इनका विश्वास है।

जनसनाथजी जांभोजी के समकालीन संत थे। यह हम्मीरजी नामक जाणी जाट और उनकी पत्नी रूपादे के पौष्य पुत्र थे। इनका जन्म वि.सं. 1539 कार्तिक शुक्ला एकादशी के दिन कतरियासर (बीकानेर) नामक गाँव में हुआ था। इन्होंने वि.सं. 1551 की आश्विन शुक्ल सप्तमी के दिन गोरखनाथ की परम्परा के किसी साधु से दीक्षा ली। संत लालदास का जन्म वि.सं. 1597 की श्रावण कृष्णा पंचमी (रविवार) को मेवात प्रदेश के धोलीदूब नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम चांदमल तथा माता का नाम समदा था। लालदासजी मेव जाति के लकड़हारे थे। तिजारा के एक मुस्लिम संत गदन चिश्ती से इन्होंने दीक्षा लेकर बाधोली (अलवर) में एक पहाड़ी पर कुटिया बनाकर रहने लगें वहाँ भक्तों की भीड़ जुटने लगी कुछ विरोधी भी हो गये। आखिर में वे नगला आ गये जहाँ 108 वर्ष की आयु में वि.सं. 1705 में वे ब्रह्मलीन हो गये। इनकी कब्र और मकबरा दोनों शेरपुर (अलवर) में बना हुआ है। संत लालदास एक ऐसे ईश्वर में विश्वास करते थे जो सबका स्वामी है, उसके अनेक नाम हैं, वह सर्वशक्तिमान है, वह सर्वत्र विद्यमान है। उसके स्मरण मात्र से सब दुख मिट जाते हैं। सद्गुरू का महत्व इनके पंथ में भी बताया गया है। साधु-संगत पर भी यह पंथ जोर देता है। हृदय की शुद्धता, शील, दया, समदृष्टि, अपरिग्रह आदि मानवीय गुणों के पालन का उपदेश इनकी वाणियों का मुख्य विषय है।

मध्यकालीन संतों ने 'राम से स्नेह रखने वाला भक्त' एवं 'राम द्वारा स्नेह पाने वाला भक्त' दोनों अर्थों में रामस्नेही शब्द का प्रयोग किया है। संत नामदेव (1270-1350 ई.) में रामस्नेही शब्द का प्रयोग राम द्वारा स्नेह पाने वाले भक्त के अर्थ में प्रयोग किया है।

मोकउ मिलिउ रामस्नेही,
त्रिहि मिलिए देह सुदेही।।

संत कबीर ने (1440-1510 ई.) ने रामस्नेही शब्द के अर्थ 'राम जो भक्त से प्रेम करते हैं'' के रूप में प्रयोग किया है।

कबहूँ देखूं मेरे रामस्नेही।
जा बिन दुख पावे मेरी देही।।

गोस्वामी तुलसीदास (1532-1623 ई.) ने रामस्नेही शब्द का प्रयोग ''राम से प्रेम पाने वाले भक्त'' के अर्थ में किया है।

भरत सरिस को रामस्नेही।
जगुजप राम राम जपु देही।।

रामस्नेही सम्प्रदाय में रामस्नेही शब्द का प्रयोग सभी संतों ने ''राम से स्नेह करने वाले भक्त'' के अर्थ के रूप में प्रयोग किया है। संत दरिया साहब ने जब ज्येष्ठ शिष्य पूरणदास को वि.सं. 1772 को आश्विन पूर्णिमा को दीक्षा प्रदान की तो रामस्नेही कहकर सम्बोधित किया जिसका अर्थ राम से स्नेह रखने वाला भक्त है।

कृपा कर सतगुरू कहै, पूरण सुन मम बात।
निश्चय मन धारण करो, सुन रामस्नेही तात।।

संत हरिरामदासजी ने अपनी अनुभववाणी में रामस्नेही शब्द का प्रयोग राम से स्नेह रखने वाले भक्त के रूप में किया हैं -

सब जग बिंध्या जेवरी, निरबंधन नहीं कोय।
जनहरीया निरबंध है, रामस्नेही होय।।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

संत रामचरणजी ने भी रामस्नेही शब्द का प्रयोग राम से स्नेह करने वाले भक्त के अर्थ में किया है।

रामस्नेही राम को नहीं आन का दास।

मध्यकाल से ही केवल राम-नाम का स्मरण करने वाले संतों को रामस्नेही नाम से जाना जाता था। जब संत दरिया साहब, संत रामचरण और संत हरिरामदास ने अपने देशों में विशेष तौर पर राम-नाम स्मरण का आग्रह किया और राम-नाम स्मरण पर बल देते थे तब वे रामस्नेही नाम से पुकारे गये। जब इन्होंने अपनी विशेष आचार-पद्धति का निर्माण किया तो यह वर्ग विशेष एक साम्प्रदायिक स्वरूप के रूप में सामने आया, जिसे 'रामस्नेही सम्प्रदाय' के नाम से जाना जाता है।

रैण रामस्नेही सम्प्रदाय दरिया साहब द्वारा स्थापित किया गया है।

रामस्नेही जके सभा सर व संगत बैठी।
सुणी न काना बात नहीं कोई आंख्या दीठी।

दरिया साहब के परचीकार पदुमदास के अनुसार तत्कालीन जनमानस द्वारा दरिया साहब व इनकी शिष्य मंडली को राम-नाम का बार-बार स्मरण करने के कारण रामस्नेही की संज्ञा से अभिहीन किया। यही रामस्नेही सभा कालांतर में रामस्नेही सम्प्रदाय के रूप में सामने आया।

सिंहथल रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रवर्तक संत हरिरामदास का जन्म वि.सं. 1770 को भागचन्द गरू के घर हुआ। इन्होंने रामानंदी सम्प्रदाय के सन्त जैमलदास जी से आषाढ़ कृष्ण 13 संवत् 1800 में दीक्षा ग्रहण कर राम-नाम का प्रचार प्रारंभ किया। रामचरण जी के मन में भक्ति को लेकर ऊहापोह की स्थिति पैदा हो गई तो कृपाराम जी ने इन्हें गूदड़ वेश उतारकर विरक्त होकर राम का अनुसरण करने को कहा। इसी विरक्त वेष में वे अपने गुरू के साथ जयपुर आ गए और इसके बाद कृपारामजी से वृंदावन जाने की इच्छा व्यक्त की। वृंदावन जाते समय एक संत ने उन्हें ''रामस्नेही तुम कहाँ चले''? कहकर जाने से मना किया।

गुपत संत रसता माही मिलिया।
रामस्नेही तुम कहा चलीया।।

इससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय तक निर्गुण राम की साधना पद्धति वाले संतों का आचार-व्यवहार नियम भेष सब तय हो चुका था। अतः रामचरण जी के विरक्त स्वरूप को देखकर उसने उन्हें रामस्नेही कहकर पुकारा है। इस घटना के बाद रामचरण जी वृंदावन से शाहपुरा (भीलवाड़ा) आ गए और निर्गुण भक्ति का प्रचार-प्रसार करना प्रारम्भ किया।

पाँच पचीस भया जग्यासी।
रामस्नेही छाप प्रकासी।।

रामस्नेही छाप का प्रवर्तन का काल वि.सं. 1817 माना जाता है, यही रामस्नेही छाप शाहपुरा रामस्नेही सम्प्रदाय का प्रवर्तन था। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मध्यकाल में प्रचलित रामस्नेही शब्द (राम के स्नेही) का प्रयोग 18वीं शताब्दी में धार्मिक समूह विशेष एवं ऐसे साधु संतों के लिए प्रयुक्त होने लगा था जो निर्गुण रामोपासक थे। यही कारण है कि तीनों संतों (दरिया साहब, हरिरामदासजी, रामचरण जी) के अनुयायी भी निर्गुण रामोपासक होने के कारण आमजन, अन्य साधु संतों द्वारा उन्हें रामस्नेही नाम दिया गया।

रामस्नेही संतों को किसी मत सम्प्रदाय अथवा पंथ के प्रवर्तक के रूप में ख्याति प्राप्त करने का लोभ नहीं था। न ही इन्होंने अपनी वाणी में किसी सम्प्रदाय पंथ या मत विशेष का प्रचार करने का संकेत दिया है। तथापि इनके शिष्यों, प्रशिष्यों व अनुयायियों की संख्या बढ़ जाने के कारण इनके आचार-विचारों को एक स्वरूप देना जरूरी हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि कालांतर में इसका विकास एक सम्प्रदाय के रूप में होने लगा। यद्यपि मौलिक रूप से एक जैसी विचारधारा होने के बावजूद गुरू परम्परा के आधार पर इनकी पृथक्-पृथक् परम्परा कुछ भिन्नता लिए अब भी जारी हैं।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

विविध रामस्नेही सम्प्रदाय

1. रैण रामस्नेही सम्प्रदाय - नागौर - संत दरिया
2. सिंहथल रामस्नेही सम्प्रदाय - बीकानेर - हरिराम दास
3. खेड़ापा रामस्नेही सम्प्रदाय - जोधपुर - संत रामदास
4. शाहपुरा रामस्नेही सम्प्रदाय - भीलवाड़ा - संत रामचरण

शाहपुरा का रामस्नेही सम्प्रदाय

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-चुगे।।

हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ, अर्थात् साकार रूप में प्रकट होता हूँ। साधु पुरूषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ। यह कथन श्रीकृष्ण का अर्जुन के प्रति है जिसका मन्तव्य है कि जब-जब पृथ्वी पर अधर्म, अत्याचार, अनाचार, कदाचार आदि अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाते हैं, तब स्वयं भगवान धराधाम पर अवतरित होते हैं। दुष्टों का अनाचारियों का अधर्मियों का संहार करके वे धर्मात्माओं, सदाचारियों का परित्राण करते हैं।

राम नाम को निरंजन स्वरूप बताकर इससे इतर समस्त को अंजन स्वरूप माया बताया गया है। शब्द काल व काया से परे है। शब्द ही सृष्टि का अभिन्न निमित्तोपादानकारण है। फिर भी यह सृष्टि में लिप्त नहीं होता है और न ही अविद्या जन्य संसार से आच्छादित होता हैं। असंख्य युग बीत चुके है और अनन्त युग आगे बीतेंगे, फिर भी शब्द एकरस रहेगा। रामचरण जी ऐसे ही निर्गुण-निराकार, निर्विकार, अद्वैत स्वरूपी शब्द के आराधक थे और उन्होंने विक्रम की उन्नीसवीं शताब्दी में ऐसे ही राम-नाम शब्द स्वरूपी ब्रह्म की भक्ति का सघन प्रचार-प्रसार करके भारतवर्ष के असंख्य जीवों को सद्मार्ग पर चलने को प्रेरित किया।

शाहपुरा केन्द्र के प्रमुख सन्त/प्रवर्तक

संत रामचरण- रामचरण जी का जन्म ननिहाल सोडा नामक गाँव में माँ देवहुति के गर्भ से माघ शुक्ला चतुदर्शी, शनिवार, विक्रम संवत् 1776 को हुआ। इनके पिता बखतराम कापड़ी गोत्रीय विजयवर्गीय वैश्य थे, जो बनवाड़ा ग्राम के निवासी थे। इनका परिवार राज्य-ठिकाने की नौकरी करता था। राज्य-कर्मचारी होने से इनका परिवार प्रतिष्ठित और सर्वविध सम्पन्न था। 31 वर्ष की उम्र होने पर एक रात इन्होंने स्वप्न देखा कि ये एक नदी में बहे जा रहे हैं, बचाने वाला कोई नहीं है। नदी का प्रवाह इतना प्रबल था कि ये असहाय किंकर्तव्यविमुढ़ इतने में ही एक वृद्ध महात्मा ने इनको बहने से बचाकर किनारे लाकर नदी से बाहर निकाल दिया। जागने पर स्वप्नगत संकेतों पर गंभीर चिन्तन किया और समझा कि संसार और संसार के काम-काज ही प्रबल वेग से बहती नदी हैं। बहने वाला व्यक्ति मैं ही हूँ। नदी से बाहर निकालने वाले गुरू ही हैं। अतः मुझे ऐसे ही परमार्थी अहैतुक कृपा करने वाले ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरू की शरणावलम्बन करनी चाहिए, ताकि में स्वात्मसाक्षात्कार रूप आत्मकल्याण प्राप्त कर सकूँ।

बिना समय गँवाए, ये तत्काल दाँतड़ा पहुँच गए। संत कृपाराम जी से मिलकर इनको विश्वास हो गया कि ये ही वे महापुरूष हैं जिन्होंने मुझे वेगवती नदी में बहते हुए से बचाया था। संत कृपाराम से इनका सम्वाद पूरे 15 दिन तक चलता रहा। ये शिष्यता ग्रहण करने पर सुदृढ़ थे तो स्वामीजी इन्हें बार-बार समझाते रहे कि घर-गृहस्थी छोड़कर वीतरागी बनकर राम-नाम जापक बनना असि-धार पर चलने के समान है।

संत कृपाराम ने वैष्णवीय पंच संस्कार करते हुए इनको भाद्रपद शुक्ला सप्तमी, सम्वत् 1808 को शिष्य बना लिया और इनका नाम रामकिशन के स्थान पर रामचरण रखा।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

विक्रम संवत् 1815 में गलता (जयपुर) में विशाल वैष्णव-मेला आयोजित हुआ जिसमें कृपाराम जी के साथ ये भी गलता जयपुर गये। वहाँ साधु-सन्तों को पारस-पूजा के लिए झगड़ते देख इनका मन इन मेलों से खिन्न हो गया और इन्होंने संत कृपाराम से निवेदन किया कि अब मैं पंथ संप्रदाय के इन झगड़े-झंझटों में न रहकर एकाकी रहना चाहता हूँ ताकि चित्तवृत्ति को सभी औरों से समेटकर एकमात्र परब्रह्म-परमात्मा में लगा सकूँ। इन्होंने भेषरूपी प्रवृत्तिमार्ग को त्यागकर निवृत्तिमार्ग को अंगीकार कर लिया।

पाँच पचीस भया जिग्यासी, रामस्नेही छाप प्रकासी।

वि.सं. 1808 से 1820, 12 वर्षों तक की अखंड साधना के उपरांत रामचरण जी को स्वात्म साक्षात्कार हुआ। जिसका वर्णन नवलराम मंत्री ने अनुभववाणी का सम्पादन करते हुए किया है। वि.सं. 1820 में अनुभववाणी का उच्चारण शुरू हुआ जिसको नवलराम तत्काल लिख लिया करते थे। इस प्रकार नवलराम ने संत रामचरण की 1820 से 1827 के मध्य उच्चरित समस्त वाणी को विभिन्न अंगों, ग्रंथों व रागों में विभाजित करके सम्पादित किया। इसी को अंगबद्ध वाणी कहा जाता है। इसके बाद समस्त वाणी 09 ग्रंथों में रामजन जी द्वारा सम्पादित की गई। संत रामचरण 1817-1824 तक भीलवाड़ा में रहे। 1826 के कार्तिक माह में स्वामीजी सोलह शिष्यों के साथ शाहपुरा नरेश राजा रणसिंह के निमंत्रण पर शाहपुरा पधारे यहाँ ये अपने अंतिम समय वैशाख कृष्ण-पंचमी वि.सं. 1855 तक रहे। कई चातुर्मास भीलवाड़ा में किये। रामचरण जी के 225 विरक्त शिष्यों में से 12 को प्रधान शिष्य होने का गौरव प्राप्त है।

1. बलभराम
2. रामसेवक
3. रामप्रताप
4. चेतनदास
5. कान्हड़दास
6. द्वारकादास
7. भगवानदास
8. रामजन
9. देवादास
10. मुरलीराम
11. तुरसीदास
12. नवलराम मंत्री

इनमें से तीन आगे चलकर आचार्य गद्दी पर पदारूढ़ हुये।

1. रामजन
2. दुल्हेराम
3. चतुरदास

इनकी शिष्य परम्परा थाम्बायती परम्परा न कहलाकर खालशाही परम्परायें कहलाई। संत रामचरण जी शाहपुरा में वैशाख कृष्ण पंचमी को विक्रम संवत् 1855 को ब्रह्मलीन हुए। प्राणांत हो जाने पर भी संत रामचरण के दोनों होठ हिलते रहे और राम-नाम की ध्वनि आती रही, इन्होंने स्वयं द्वारा कही गई साखी को पूर्णरूपेण चरितार्थ किया।

राम नाम सूँ प्रीति करि, तन मन सूँज समेत।
प्राण गयाँ छुटै नहीं, ज्यूँ बैल वृक्ष को हेत।

अर्थात् राम नाम से कुछ इस तरह की प्रीति हुई हैं कि तन-मन की कोई सुध नहीं हैं, प्राण-पखेरू उडने पर भी राम नाम ही आता रहा ऐसा प्रेम रहा कि जैसे वृक्ष का शाखा से हो।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

संत रामचरण द्वारा संप्रदाय प्रवर्तन एवं आचार संहिता का प्रकाशन

संत रामचरणजी परम वीतराग, निरपेक्ष, निस्पृही, निरीच्छ, विरक्त शिरोमणि महापुरूष थे। उन्हें पर्यटन भी प्रिय नहीं था, नहीं उन्हें शिष्य बनाने या उपदेश सुनाने और ना ही कोई उन्हें आमंत्रित करके उनका आतिथ्य करे यह अपेक्षाऐं उन्हें होती थी। वे रामरजा जी में, सहज में रामभजन करते हुए कलाक्षेप किया करते थे।

संत रामचरण ने निर्गुण-निराकार, एक अद्वैत, परब्रह्म परमात्मा को अपना इष्ट उपास्य स्वरूप माना है। रामजी के अतिरिक्त सभी कुछ असत्य, भ्रम, माया व कलने (नष्ट होने) वाला विनाशी है। उन्होंने सच्चिदानन्द ब्रह्म की परिभाषा ही बदल दी जिसमें-

1. सत् - तीनों कालों में एकरस रहने वाला।
2. चित् - अलुप्त अर्थात् तीनों कालों में तिरोहित न होने वाला।
3. आनंद - अखण्ड आनंद जिसकी कोई सीमा नहीं है।

संत रामचरण ने अपने निर्गुण-निराकार राम की व्याख्या करते हुए उसे सचराचर का अधिष्ठान कहा है। ब्रह्म के विषय में कहा है कि ब्रह्म निर्लिप्त है, वह कहीं भी लिपायमान नहीं होता है। इसी सम्बन्ध में स्पष्ट किया है कि लिप्त वह होता हैं जो सकाम होता है, ब्रह्म तो अकाम है। सच्चिदानंद निरावलम्ब, अकल व, अकाम ब्रह्म है। मोक्ष के सम्बन्ध में कहा है कि यह 'अगमपद' है जिसमें जीव के अहम् की समाप्ति हो वह जन्म-मरण ओर जरा से मुक्त हो जाता है।

आपा मेट आप मैं मिलिया, आप रूप होइ रहिया।
जनमै मरै न जरा सतावै, इसा अगम पद लहिया।।

संत रामचरण ने स्पष्ट किया हैं कि मोक्ष की प्राप्ति में अहम् ही बाधक है।

शाहपुरा के रामस्नेही-दर्शन एवं सिद्धांत

1. शाहपुरा केन्द्र के रामस्नेही संतों में राम-नाम की उपासना, इष्ट के प्रति दृढ़ता प्रथम एवं अनिवार्य हैं।
2. नित्य गुरू दर्शन, रामद्वारा दर्शन एवं प्रणाम परिक्रमा अवश्य रूप से करते हैं।
3. शाहपुरा केन्द्र के सन्त कण्ठी एवं तिलक धारण करते हैं।
4. इन सन्तों को शीत प्रसाद लेने के पश्चात् भोजन ग्रहण करना होता हैं।
5. जल को छानकर काम में लेते है। इससे असंख्य जीव हत्या के पाप से बचा जा सकता है।
6. ये अपने सिर पर शिखा रखते है।
7. प्राणी मात्र पर दया करना एवम् किसी के साथ कटु व्यवहार न करना।
8. चोरी, जुआ एवं व्यसन जैसी कुप्रवृत्तियों से दूर रहना।
9. सन्तों की सेवा ही इनके जीवन का आदर्श है।
10. रामद्वारा के विकास में यथाशक्ति योग देना।
11. शाहपुरा रामस्नेही संत रात्रि में भोजन नहीं करते है।

शाहपुरा केन्द्र के सिद्धान्तों का अवलोकन करने से पता चलता हैं कि रामस्नेही संतों का जीवन अत्यंत सादा एवं मोह-माया के बंधन से कई कोस दूर है। इन्हें अपने जीवन को गुरू की सेवा एवम् गुरू चरणों में अर्पित करते हुए मोक्ष की प्राप्ति करनी होती है।

संत रामचरण ने सन्तों के निम्न लक्षण बताये

1. रामस्नेही संत माँगता नहीं अर्थात् भिक्षावृत्ति नहीं।
2. रामस्नेही संत संग्रह नहीं करता।
3. रामस्नेही संत को राम-नाम की पहचान है।
4. रामस्नेही संत संयम, शील, संतोष दयाधर्म का पालन करता है।
5. रामस्नेही संत राम-नाम स्मरण को ही जीवन का ध्येय मानता है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

6. रामस्नेही संत विषय-त्याग करते हुए अपने जीवन को शालीनता के साथ राम-नाम स्मरण में व्यतीत करता है।
7. रामस्नेही संतों को हँसना-खेलना नहीं।
8. रामस्नेही संतों को किसी भी प्रकार की लाभ-हानि का विचार नहीं करना होता है। सदैव राम-नाम सुमिरण में ही रहना होता है।

शाहपुरा के रामस्नेहियों के प्रमुख केन्द्र

1. ईडरगढ़ का रामद्वारा
2. लूसाणी का रामद्वारा
3. गंगापुर रामद्वारा
4. निंबाड़ा (जिला-पाली मारवाड़) का रामद्वारा
5. कारोई (जिला भीलवाड़ा) का रामद्वारा
6. लाखोला (भीलवाड़ा) का रामद्वारा
7. महेन्द्रगढ़ का रामद्वारा
8. गिलूंड (जिला चित्तौड़गढ़) का रामद्वारा
9. बड़ायली (गुजरात) का रामद्वारा

इनके अतिरिक्त भी संत रामचरण के शिष्यों ने थाम्बायत रामद्वारों की परम्परा में कई जगह रामद्वारों की स्थापना की। लेकिन इस थाम्बायत परम्परा के संतों का केन्द्र (शाहपुरा) में प्रमुखता से रहा है। रामस्नेही फूलडोल महोत्सव के समय पर संतों को भोजन परोसने का कार्य भी संत पंक्ति में परम्परा से ही थाम्बायती संत ही करते हैं। समाज में संत संख्या भी थाम्बायती की अधिक रहती है, यह परम्परा अति समृद्धिशील व समाज की सेवा में इनका प्रमुख स्थान रहा है।

रामस्नेही वेश का पंथ परिचय

1. रैण रामस्नेहीः सम्प्रदाय के संत गुलाबी रंग की चादर के दोनों छोरों को पार्श्वों से लाकर गर्दन पर बाँध लेते है तथा उपर से एक गुलाबी रंग की अतिरिक्त चादर लपेटते हैं, साध्वियाँ गुलाबी, सफेद या काले रंग की धोती पहनती है।

2. सिंहथल, खेड़ापा रामस्नेहीः खेड़ापा रामस्नेही संप्रदाय में संत गोल पगडी, धोती, दुपट्टा तथा बगलबंदी पहनते थे, परन्तु वर्तमान में गुलाबी रंग के वस्त्र धारण करते है।

3. शाहपुरा रामस्नेहीः शाहपुरा रामस्नेही सम्प्रदाय के संत प्रारम्भ से हिरमिच रंग से रंगे वस्त्र पहनते हैं। ये कोपीन धारण कर चादर को विशेष रूप से ओढ़ लेते हैं। इसे ब्रह्म चोला कहा जाता है। पूरा शरीर चादर से ढ़का रहता है।

शाहपुरा रामस्नेही संत गुरूवाणी का गुटका साथ रखते है।

तुम्बी रखते हैं, हाथ में चन्दन की माला और ललाट पर गोपी चन्दन का तिलक लगाते हैं। धातु पात्रों का प्रयोग वर्जित होने के कारण लकड़ी तथा मिट्टी के पात्रों का प्रयोग करते हैं। रामस्नेही संतों ने हठयोग साधना पद्धति के विपरीत सहज अनुभव सिद्ध साधना पद्धति को अपनाया है।

शाहपुरा के रामस्नेही सम्प्रदाय का प्रमुख महोत्सव-

फूलडोल महोत्सवः रामस्नेही धर्म के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से फाल्गुन के महीने में जिसे ऋतुराज वसन्त का मौसम कहा जाता है, इसे मनाने के लिए तिथि निर्धारित हैं-

ऋत् वसन्त फागुण में होइ पूरणमासी जाणौ सोई।

भक्तों के लिए होली के त्यौहार के दिन शहर के धानमंडी नामक स्थान पर सम्पूर्ण व्यवस्था कर स्वामीजी को शहर में पधराने की स्वीकृति के पश्चात् सभी गाजे-बाजे व भजनों के साथ उत्सव स्थान पर पहुँचते हैं। नाम प्रताप-ग्रंथ व प्रहलाद चरित्र का पाठ होता है।

इसका नाम फूलडोल इसलिये पड़ा कि देवताओं ने अपने डोलों में बैठकर फूलों की वृष्टि की थी।

देवन आइ पुष्प बरसाइए।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

फूलडोल ता नाम कहाए।।

वर्तमान में यह उत्सव फाल्गुन शुक्ल 11 से चैत्र शुक्ला पंचमी तक 25 दिन रहता है। इस फूलडोल उत्सव में रामस्नेही - सम्प्रदाय के संत एवं देशों-विदेशों के श्रद्धालु भक्तजन हजारों मील की दूरी तय करते हुए पवित्र धाम शाहपुरा में उपस्थित होकर त्रिवेणी संगम-1 धाम दर्शन-2 सन्त दर्शन-3 उपदेश श्रवण के स्नान का लाभ उठाते हैं।
शाहपुरा में इस महोत्सव में सम्पूर्ण रात्रि जागरण होता है। तत्पश्चात् वाणीजी का पठन होता है। फिर सूर्योदय वेला से प्रवचन चलते हैं। संध्या समय बारहदरी में आरती का आयोजन किया जाता है। राम-भजन प्रत्येक कार्यक्रम के साथ चलता है।
इस अवसर पर सम्प्रदाय में प्रवेश पाने वाले इच्छुक व्यक्तियों को दीक्षित करने की विधि का निर्वाह किया जाता है। गूदड़ी दर्शन का कार्यक्रम बारहदरी में होता है। इस उत्सव में ही आचार्यश्री के चातुर्मास का निर्णय भी हो जाता है।

परिणाम

शाहपुरा में अंतराष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय के पीठाधीश्वर जगतगुरु आचार्य रामदयाल महाराज वृन्दावन में चार्तुमास पूरा करने के बाद शाहपुरा पहुचेगें। इससे पहले शाहपुरा के रामस्नेही अनुरागियों ने संप्रदाय की परंपरा के अनुसार रामनिवास धाम शाहपुरा से वृन्दावन पहुंच कर आचार्य को शाहपुरा पधारने का निमंत्रण देते हुए अर्जी पेश की। शाहपुरा के सर्व रामस्नेही अनुरागियों की ओर से सूर्यप्रकाश बिड़ला की अगुवाई में पहुंचे प्रतिनिधिमंडल ने वृन्दावन में चार्तुमास के आयोजन पर वहां की आयोजन समिति का आभार जताया।

बिड़ला ने बताया कि संप्रदाय की परंपरा के मुताबिक आचार्य को अर्जी पेश करने के बाद उनका एक बार शाहपुरा आगमन होता है। उसके बाद ही उनके आगे के कार्यक्रम घोषित होते है। शाहपुरा के प्रतिनिधिमंडल के वहां पर पहुंचने पर आयोजन समिति की ओर से उनका स्वागत किया गया। इस मौके पर वहां गोटकाजी की शोभायात्रा भी संत अमृतराम महाराज की अगुवाई में निकाली गयी। आचार्य रामदयाल महाराज अब विजयदशमी पर्व करके वृन्दावन से शाहपुरा के लिए प्रस्थान करेगें। उनका शाहपुरा पहुंचने का कार्यक्रम है।

अंतर्राष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय की प्रधान पीठ रामनिवास धाम में पांच दिवसीय फूलडोल के मुख्य महोत्सव का समापन रंग पंचमी पर आचार्य रामदयाल महाराज के आगामी चातुर्मास की घोषणा के साथ हाे गया।

संप्रदाय का यह 265वां जबकि आचार्य रामदयाल महाराज का यह 29वां चातुर्मास होगा। पहली बार कृष्णधाम वृंदावन में रामस्नेही संप्रदाय के चातुर्मास की घाेषणा हुई है। दिल्ली, जयपुर, इंदौर, पुष्कर सहित कई शहरों से आए भक्तों ने अर्जियां लगाकर चातुर्मास के लिए आचार्य से विनती की थी।

वृंदावन में चातुर्मास करने की घोषणा होने पर आचार्य ने पुस्तक गोटका को वृंदावन के भक्तों को सौंपी। वृंदावन के भक्तों ने रामनिवास धाम में जुलूस निकाला। अबीर-गुलाल उड़ाकर रंग खेला। इससे पहले श्रीराम मेड़िया से वाणीजी के थाल का जुलूस निकाला गया।

आचार्य रामदयाल ने थाल के जुलूस की अगवानी की, चढ़ावा भेंट किया

आचार्य रामदयाल महाराज ने थाल के जुलूस की अगवानी की। संतों ने चातुर्मास के लिए विभिन्न शहरों से आई अर्जियों का वाचन किया। सभी संतों ने आचार्य को चढ़ावा भेंट किया। स्तंभजी के दर्शन के लिए रामनिवास धाम में लंबी कतारें लगी रही। दिल्ली, गुजरात से आए श्रद्धालुओं ने रसोई की।

इस दौरान भेख भंडारी शंभूराम, संत गुरुमुख राम, संत भजना राम, संत राम नारायण, संत निर्मल राम, जगवल्लभ राम, संत राम विश्वास, संत हरिराम, संत नवनीत राम, संत मस्त राम, संत राम कृपाल, संत पप्पू राम, संत सेवा राम, संत बोलता राम, संत नवनीत राम, संत सहजराम, संत धीरज राम, संत ललित राम मौजूद थे।

निष्कर्ष

रामद्वारा (देवनागरी रामद्वार) का अर्थ है " राम का द्वार " (अर्थात, भगवान के नाम तक)। यह उन लोगों के लिए पूजा स्थल है जो रामस्नेही संप्रदाय में विश्वास करते हैं, जो "राम" (राम) के जाप की वकालत करते हैं। [1] रामस्नेही का अर्थ है "भगवान से प्रेम करने वाले लोग"। भगवान की पूजा करने का उनका तरीका सरल है। रामद्वारों में सभी धर्मों, जातियों, वर्गों आदि के लोग आते हैं। [2] [3] राम या राम की यह अवधारणा हिंदू देवता राम से भिन्न है ।

रामस्नेही संप्रदाय एक आध्यात्मिक और धार्मिक परंपरा है जिसकी शुरुआत विक्रम संवत 1817 में राजस्थान के भीलवाड़ा शहर में स्वामी श्री राम चरण महाराज के शिष्य द्वारा की गई थी, जिन्होंने संप्रदाय के लिए आध्यात्मिक और दार्शनिक आधार प्रदान किया था।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

वर्तमान समय में रामस्नेही संप्रदाय के चार प्रमुख मठ हैं । सभी भारत के राजस्थान में हैं। वे निम्नलिखित शहरों में हैं:

- शाहपुरा, राजस्थान
- बनवाड़ा, राजस्थान
- सोढ़ा, राजस्थान
- भीलवाड़ा, राजस्थान

इंदौर के छत्रीबाग स्थित रामद्वारा में एक संत से बातचीत करते लोग

छोटे रामद्वारा केंद्र गुजरात , मध्य प्रदेश , महाराष्ट्र और दिल्ली राज्यों में विभिन्न स्थानों पर स्थित हैं ।

स्वामी जी श्री राम चरण जी महाराज भीलवाड़ा से शाहपुरा आये और तपस्या की ।

जिस स्थान पर स्वामी रामचरण जी महाराज के शरीर का दाह संस्कार किया गया था, वहां एक विशाल रामद्वारा बनाया गया है। यह अब रामस्नेही संप्रदाय का प्रमुख रामद्वारा है ।

इस रामद्वारे को रामनिवास धाम या रामनिवास बैकुंठ धाम भी कहा जाता है।

निर्माण

रामद्वारा की बारहदरी ।

शाहपुरा रामद्वारा को शाहपुरा के तत्कालीन राजा, महाराजा अमर सिंह और उनके भाई छत्र सिंह द्वारा प्रायोजित किया गया था। इसका निर्माण जारोर खान और कुशल खान नामक रचनाकारों ने किया था। यह भारत में हिंदू और मुसलमानों के भाईचारे का भी एक बड़ा उदाहरण है ।

निर्माण में उपयोग किए गए सभी संगमरमर के पत्थर पास के कांति नामक गांव की उत्तरी सीमा के पास एक स्थान से प्राप्त किए गए थे । प्रयुक्त सभी संगमरमर के पत्थरों में एक विशेषता है कि प्रत्येक संगमरमर के पत्थर पर हिंदी (देवनागरी) अक्षरों के अनुसार निर्माण शब्द "राम" (भगवान राम), धनुष, संत, भारत का मानचित्र, तलवार, का एक चित्र और पत्थर का निशान होता है। शेर, बंदर और अन्य प्राकृतिक चित्र।

शाहपुरा रामद्वारा की मुख्य (और आधार) संरचना एक अष्टकोणीय आकार का चमकदार संगमरमर का स्तंभ है जो लगभग 12 फीट लंबा है। यह स्तंभ राम चरण महाराज के दाह संस्कार स्थल पर स्थित है । इस स्तंभ को समाधि स्तंभ कहा जाता है।

स्तंभ के ऊपर की मंजिल को बारादरी (एक प्रकार का ग्रीष्मकालीन घर जिसमें कई खुले संगमरमर के दरवाजे होते हैं) कहा जाता है। बारादरी के केंद्र में एक आयताकार पत्थर रखा गया है जो मुख्य स्तंभ के ठीक ऊपर है।

बारादरी में 108 छोटे स्तंभ हैं जो 84 खुले द्वार बनाते हैं।

निर्माण विभिन्न चरणों में किया गया।

रामद्वारा के भिक्षु

रामस्नेही सम्प्रदाय के साधु अपने पहनावे में एक जैसे होते हैं । वे बहुत हल्के गुलाबी रंग का वस्त्र पहनते हैं। शपथ लेने के बाद, भिक्षु अपने परिवार में वापस नहीं लौट सकते हैं और उन्हें बिना किसी पूर्वाग्रह के पूरी दुनिया के साथ समान और निष्पक्ष व्यवहार करना होगा। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे सभी परिभाषित नियमों का सख्ती से पालन करें। [1]

पूजा पद्धति एवं आस्था

रामस्नेही भगवान के नाम (राम राम) में विश्वास करते हैं और मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते हैं । रामस्नेही सरल एवं आसानी से परिभाषित नियमों का ही पालन करते हैं। रामस्नेही वर्तमान आचार्य एवं भिक्षुओं की गद्दी के दर्शन मात्र करते हैं। वे पिछले सभी (दिवंगत) आचार्यों और संतों को भी सम्मान देते हैं। [2] [3]

3:00राम धुन- रामस्नेही संप्रदाय के प्रमुख केंद्र रामद्वारा शाहपुरा में सायं राम राम का जाप।

रामस्नेहियों को राम (राम, भगवान का एक नाम) नाम याद है। विचारधारा के तीन मुख्य स्तंभ हैं:

- अपने हृदय में भगवान (राम) का नाम रखें
- हर प्राणी पर दया करो
- किसी भी जरूरतमंद व्यक्ति की सेवा के लिए तत्पर रहें

रामचरण जी के वाणी उच्चारण के पश्चात् रामस्नेही सम्प्रदाय के अनेकानेक शिष्य बने। कृपारामजी ने अनुभववाणी का अवलोकन किया और उन्हें ऐसा लगा कि इस वाणी के पीछे, महती साधना अनुभूति की स्वच्छता एवं भावों की सहज गरिमा है। यह वाणी तो ऐसे महापुरूष की वाणी के समान है जिसने आत्मतत्व का साक्षात्कार कर लिया है।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. सर्वसारः सन्त गुरूमुख रामस्नेही श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट, शाहपुरा भीलवाड़ा प्रथम संस्करण वि.स. 2055
2. सर्वसार गाथा प्रसंग - सन्तगुरूमुख रामस्नेही रामद्वारा गंगापुर महेन्द्रगढ़ भीलवाड़ा द्वितीय संस्करण 2015
3. रज्जब की सर्वंगी - ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल श्री दयाल ट्रेडर्स पुराना सदर बाजार रायगढ़ (छत्तीसगढ़) 2010
4. स्वामी हरिराम रामस्नेही - ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल, श्री रामद्वारा व्यापार (अजमेर) प्रथम संस्करण 2015
5. रज्जब दास की सरबंगी - सं. शहाबुद्दीन इराकी ग्रंथायन अलीगढ़, 1985
6. आदि श्री गुरू ग्रंथ साहिब - सं. डॉ. मनमोहन सहगल , भुवन वाणी ट्रस्ट लखनऊ (दूसरी सैची) चतुर्थ संस्करण 1995 ई.
7. आदि श्री गुरूग्रंथ साहिब - सं. डॉ. मनमोहन सहगल , भुवन वाणी ट्रस्ट लखनऊ (तीसरी सैची) चतुर्थ संस्करण 1995 ई.
8. आदि श्री गुरूग्रंथ साहिब - सं. डॉ. मनमोहन सहगल , भुवन वाणी ट्रस्ट लखनऊ (चौथी सैची) चतुर्थ संस्करण 1995 ई.
9. राजस्थानी संत साहित्य - स्वामी नारायणदास, श्री दादूदयाल महाराज, जयपुर परिचय सं. 2037 वि.
10. श्री दादू वाणी - स्वामी नारायण दास अजमेर 1967
11. पेज 324, बॉम्बे प्रेसीडेंसी का गजेटियर, अहमदाबाद गवर्नमेंट सेंट्रल प्रेस
1879 https://archive.org/stream/gazetteerbombay18enthgoog#page/n346/mode/2up
12. ^ पेज 24, राजस्थान की आध्यात्मिक विरासत, दिनेश चंद्र शुक्ला, किताबों का खजाना,
1992 https://books.google.com/books?id=FhscAAAAAIAAJ&q=Ramd वारा+शाहपुरा
13. ^ प्रस्तावना, लक्ष्य राम जी महाराज, "राम रहस्य
दर्शन" https://docs.google.com/file/d/0B3bUXrI1MZN1ZjI0WHhnX2s4T3M/edit?usp=sharing
14.^ पृष्ठ 29 (पीडीएफ का), रामस्नेही भास्कर, मार्च
2005 https://docs.google.com/file/d/0B3bUXrI1MZN1LVQ4R1RvYlQzQkU/edit?usp=sharing
15. तोनगारिया, राहुल. "राजस्थानी संस्कृति में दादू एवं रामस्नेही सम्प्रदाय का योगदान". ignca.nic.in. मूल से 24 सितंबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 अगस्त 2015.
16.↑ "रामस्नेही संप्रदाय के प्रवर्तक रामचरण महाप्रभु". दैनिक भास्कर. मूल से 23 सितंबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 अगस्त 2015.

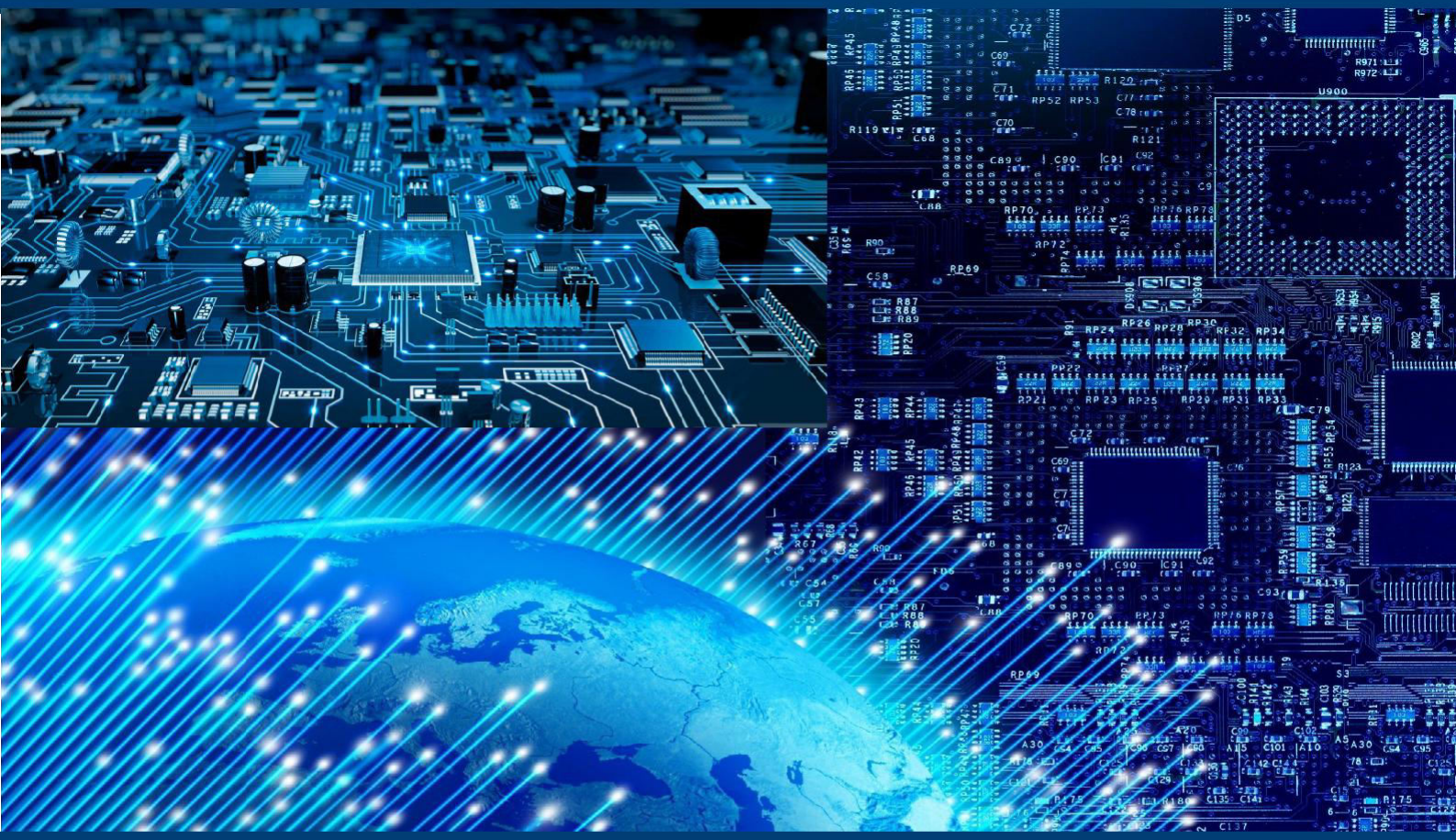

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |